30 सूरए अर रूम

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 1: अलिफ़ लाम मीम

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में केवल "अलिफ़ लाम मीम" जैसे संकेतक शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो स्पष्ट अर्थ नहीं देते।
- **हेतु (Reason):** यह प्रतीकात्मक शब्द बिना किसी स्पष्ट जानकारी के प्रयोग किए गए हैं। न्याय दर्शन में स्पष्ट और समझने योग्य शब्दों का प्रयोग महत्वपूर्ण है।
- **उदाहरण (Example):** जैसे भारतीय दर्शन में प्रतीक और संकेतों का प्रयोग सीमित और व्याख्यायित किया जाता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में प्रमेय का अभाव है, क्योंकि कोई विशेष जानकारी नहीं दी जा रही है, केवल प्रतीकात्मक शब्दों का प्रयोग किया गया है।

आयत 2: बहुत क़रीब के मुल्क में रोमी हार गए

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** रोमी मुल्क हार गए।
- **हेतु (Reason):** इस आयत में रोमी मुल्क की हार का उल्लेख किया गया है, लेकिन इसका ऐतिहासिक या प्रमाणिक साक्ष्य नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय इतिहास में भी कूटनीतिक और युद्धों के परिणामों को प्रमाणित किया जाता है, जैसे महाभारत में।
- **निगमन (Conclusion):** आयत में इतिहास के बारे में कोई ठोस प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 3: मगर ये लोग अनक़रीब ही अपने हार जाने के बाद चन्द सालों में फिर ग़ालिब आ जाएँगे

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत भविष्य के बारे में अनुमानित दावा करती है कि कुछ सालों बाद हारने वालों की जीत होगी।
- **हेतु (Reason):** यह दावा अनुमान पर आधारित है, बिना किसी ठोस प्रमाण या साक्ष्य के।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भविष्यवाणियों का कोई ठोस आधार नहीं होता, जब तक उनका समर्थन कर्मों या प्रमाणों से न हो।
- **निगमन (Conclusion):** भविष्यवाणी और अनुमान बिना प्रमाण के न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते।

आयत 4: क्योंकि (इससे) पहले और बाद हर अम्र का एख़्तेयार ख़ुदा ही को है और उस दिन ईमानदार लोग ख़ुदा की मदद से खुश हो जाएँगे

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह कहती है कि हर अम्र का अधिकार केवल ईश्वर के पास है।
- **हेतु (Reason):** यह बयान एक सामान्यीकृत कथन है, जिसका कोई अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में कर्मों के आधार पर फल मिलने की बात कही गई है, और न कि केवल ईश्वर की इच्छा से।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल एक सामान्यीकृत दावा करती है, जिसका कोई निश्चित प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है।

आयत 5: वह जिसकी चाहता है मदद करता है और वह (सब पर) ग़ालिब रहम करने वाला है

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि ईश्वर जिसे चाहता है, उसकी मदद करता है।**
- **हेतु (Reason): यह कथन एक व्यक्तिगत इच्छा और क्रिया का संदर्भ देता है, जो बिना प्रमाण के आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में परमात्मा की न्यायपूर्णता और हर व्यक्ति के कर्मों के अनुसार फल की बात की जाती है, न कि केवल ईश्वर की इच्छाशक्ति के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भी न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है, क्योंकि यह केवल ईश्वर की इच्छा पर आधारित है, बिना किसी तर्क या प्रमाण के।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	**प्रमेय**	**प्रतीकात्मक शब्दों का कोई स्पष्ट अर्थ नहीं है।**
2	**प्रमाण**	**ऐतिहासिक साक्ष्य का अभाव है।**
3	**अनुमान**	**भविष्यवाणी बिना प्रमाण के की गई है।**
4	**व्याप्ति**	**सामान्यीकृत दावा, बिना प्रमाण के।**
5	**प्रमाण**	**केवल इच्छाशक्ति पर आधारित दावा, बिना तर्क के।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क और प्रमाण का अभाव है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों में प्रमेय, प्रमाण, अनुमान और व्याप्ति का महत्वपूर्ण स्थान है, लेकिन ये आयतें बिना तर्क या प्रमाण के सामान्यीकृत दावों पर आधारित हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 6: ख़ुदा का वायदा है

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि ख़ुदा अपने वायदे के ख़िलाफ नहीं करता।
- **हेतु (Reason):** यह दावा बिना किसी ठोस प्रमाण के किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी वादे का प्रमाण या तर्क होना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से भगवद गीता में, व्यक्ति के कर्मों के आधार पर फल मिलने की बात कही जाती है, न कि केवल किसी भगवान की इच्छा से।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में प्रमेय का अभाव है क्योंकि कोई प्रमाण नहीं दिया गया है, केवल एक सामान्य दावा किया गया है।

आयत 7: ये लोग बस दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ाहिरी हालत को जानते हैं

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि लोग केवल इस दुनिया की स्थिति को जानते हैं और आख़ेरत से ग़ाफिल हैं।
- **हेतु (Reason):** यह दावा बिना किसी ठोस प्रमाण के किया गया है, क्योंकि यह केवल एक सामान्यीकरण है और व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में व्यक्ति को आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए बाहरी परिस्थितियों से परे जाकर सत्य की तलाश करने की शिक्षा दी जाती है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण और तर्क के बिना एक सामान्यीकरण करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 8: क्या उन लोगों ने अपने दिल में ग़ौर नहीं किया कि ख़ुदा ने सारे आसमान और ज़मीन को और जो चीजें उन दोनों के दरम्यान में हैं, एक मुक़र्रर मियाद के लिए पैदा किया

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि सारे आकाश और पृथ्वी को एक निश्चित समय के लिए उत्पन्न किया गया है।
- **हेतु (Reason):** यह दावा एक सामान्यीकृत सत्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या अनुभवजन्य आधार नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, जैसे पुराणों में समय की अवधारणा को विस्तार से समझाया गया है और यह निश्चित रूप से प्रमाणित किया गया है कि ब्रह्माण्ड की रचना का एक समय चक्र है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत का दावा बिना प्रमाण और तर्क के प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 9: क्या ये लोग रुए ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग इनसे पहले गुज़र गए उनका अंजाम कैसा हुआ

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि लोगों को पहले की सभ्यताओं के अंजाम पर विचार करना चाहिए।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण या अनुभवजन्य आधार नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से संस्कृत ग्रंथों में, अतीत की घटनाओं से शिक्षा लेने पर बल दिया गया है, लेकिन हर घटना का व्यक्तिगत और सांस्कृतिक संदर्भ होता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में ऐतिहासिक दृष्टिकोण का पालन किया गया है, लेकिन इसका तर्क प्रमाण और अनुभव से समर्थित नहीं है।

आयत 10: फिर जिन लोगों ने बुराई की थी उनका अंजाम बुरा ही हुआ

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (कारण)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि बुराई करने वालों का अंजाम बुरा होता है।

- **हेतु (Reason):** यह दावा स्पष्ट रूप से बुराई के कारण दंड देने की बात करता है, लेकिन इसमें कोई तर्क नहीं है कि बुराई को किस रूप में परिभाषित किया जाता है।
- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन में कर्म और फल के सिद्धांत के तहत, बुराई का परिणाम निश्चित होता है, लेकिन उसे परिभाषित और प्रमाणित किया जाता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में बुराई के परिणाम के बारे में दावा तो किया गया है, लेकिन इसका कोई तर्क या स्पष्ट परिभाषा नहीं दी गई है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	प्रमेय	कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया।
7	प्रमाण	सामान्यीकरण, कोई प्रमाण नहीं।
8	व्याप्ति	सामान्यीकृत दावा, बिना प्रमाण के।
9	प्रमाण	ऐतिहासिक घटनाओं का प्रमाण नहीं।
10	Hetu	बुराई की परिभाषा और कारण स्पष्ट नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कई सामान्यीकरण और दावे किए गए हैं, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार बिना ठोस प्रमाण, तर्क या स्पष्ट परिभाषा के प्रस्तुत किए गए हैं। इन आयतों में प्रमेय, प्रमाण, और व्याप्ति का अभाव है, जिससे ये आयतें तात्त्विक दृष्टि से अप्रमाणित और तर्कहीन प्रतीत होती हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 11: ख़ुदा ही ने मख़लूकात को पहली बार पैदा किया फिर वही दुबारा (पैदा करेगा)

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा ने मख़लूकात को पहली बार पैदा किया और फिर उसे दुबारा पैदा करेगा।**
- **हेतु (Reason): यह दावा बिना किसी ठोस प्रमाण या अनुभवजन्य आधार के किया गया है। प्रमेय के अनुसार, किसी चीज़ के बारे में दावा करते समय उस दावे का प्रमाण होना चाहिए, जो यहाँ अनुपस्थित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से सृष्टि के विषय में, वैदिक साहित्य और दर्शन में यह विचार है कि ब्रह्मा के एक चक्र के भीतर संसार का सृजन और संहार होता है, लेकिन इसका ठोस तात्त्विक और शास्त्रीय प्रमाण दिया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का दावा बिना प्रमाण और तर्क के किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 12: और जिस दिन क़यामत बरपा होगी (उस दिन) गुनेहगार लोग ना उम्मीद होकर रह जाएँगे

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** क़यामत के दिन गुनाहगार लोग निराश हो जाएंगे।
- **हेतु (Reason):** यह दावा सिर्फ एक भविष्यवाणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो कोई ठोस तर्क या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं प्रदान करता। न्याय दर्शन में, कोई भी भविष्यवाणी तब तक प्रामाणिक नहीं मानी जाती जब तक उसे अनुभवजन्य प्रमाण से समर्थित न किया जाए।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में, भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि जो भी भक्ति करता है, उसका फल निश्चित रूप से उसे मिलेगा, लेकिन इसके लिए कर्म और मानसिक स्थिति महत्वपूर्ण है, न कि केवल भविष्यवाणी।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है और इसे केवल भविष्यवाणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत के अनुरूप नहीं है।

आयत 13: और उनके (बनाए हुए ख़ुदा के) शरीकों में से कोई उनका सिफ़ारिशी न होगा और ये लोग ख़ुद भी अपने शरीकों से इन्कार कर जाएँगे

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (कारण)
 विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): क़यामत के दिन लोग अपने बनाए हुए शरीकों से इन्कार कर देंगे और उन्हें कोई सिफारिश नहीं करेगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क कि लोग अपने शरीकों से इन्कार करेंगे, एक कारण पर आधारित नहीं है। न्याय दर्शन में किसी घटना के घटने के लिए उसका कारण होना चाहिए, जो यहाँ स्पष्ट नहीं किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जैसे कि योग दर्शन में, आत्म-ज्ञान और आत्म-जागरूकता के माध्यम से किसी भी प्रकार की भ्रांति से मुक्ति की बात की जाती है, जो यहाँ नहीं दी गई है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी स्पष्ट कारण के एक घटना को घटित होने का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**

आयत 14: और जिस दिन क़यामत बरपा होगी उस दिन (मोमिनों से) कुफ़्फ़ार जुदा हो जाएँगें

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
 विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): क़यामत के दिन मोमिनों और कुफ़्फ़ार के बीच विभाजन होगा।**
- **हेतु (Reason): यह दावा एक निश्चित घटना के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसमें कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है कि यह विभाजन क्यों होगा। न्याय दर्शन में, किसी घटना के होने के लिए उसके कारण का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से सांख्य योग में, आत्मा का उद्देश्य मुक्त होना है और यह विभाजन आत्मा के परम तत्व में लीन होने से संबंधित है, न कि किसी कृत्रिम विभाजन से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी कारण के एक भविष्यवाणी करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 15: फिर जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो वह बाग़े बेहेषत में निहाल कर दिए जाएँगे

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, वे स्वर्ग में जाएंगे।**
- **हेतु (Reason): यह दावा बिना किसी तर्क या प्रमाण के किया गया है कि केवल ईमान और अच्छे कर्म ही स्वर्ग का कारण बनते हैं। न्याय दर्शन में किसी भी अच्छे या बुरे कार्य के फल के लिए एक स्पष्ट तात्त्विक आधार होना चाहिए, जो यहाँ अनुपस्थित है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में कर्म के सिद्धांत पर जोर दिया गया है, जहां कार्यों के फल व्यक्ति के मानसिक स्थिति और भावना के आधार पर निर्धारित होते हैं, न कि केवल बाहरी कर्मों से।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में प्रमेय का अभाव है क्योंकि इसके लिए कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	**प्रमेय**	**कोई प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया।**
12	**अनुमान**	**भविष्यवाणी का कोई प्रमाण नहीं।**
13	Hetu	**कारण स्पष्ट नहीं किया गया।**
14	**व्याप्ति**	**बिना कारण के भविष्यवाणी की गई।**
15	**प्रमेय**	**कोई तात्त्विक आधार नहीं।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रमेय, प्रमाण, और व्याप्ति के सिद्धांतों का पालन नहीं किया गया है। इनमें किए गए दावे तात्त्विक दृष्टि से अप्रमाणित हैं और इनका कोई अनुभवजन्य आधार या तार्किक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है। ये आयतें न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ हैं और बिना प्रमाण या स्पष्ट कारण के केवल भविष्यवाणी करती हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 16: मगर जिन लोगों के कुफ़्र एख़्तेयार किया और हमारी आयतों और आख़ेरत की हुज़ूरी को झुठलाया तो ये लोग अज़ाब में गिरफ्तार किए जाएँगे

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (कारण)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** जो लोग कुफ़्र (अविश्वास) अपनाएंगे और आख़ेरत की सत्यता को नकारेंगे, उन्हें अज़ाब (सजा) मिलेगी।
- **हेतु (Reason):** यह आयत आरोपित करती है कि आख़ेरत को न मानने के कारण सजा दी जाएगी, लेकिन इसका कारण स्पष्ट नहीं किया गया है। न्याय दर्शन में, किसी भी घटना का कारण स्पष्ट होना चाहिए, जिससे उस घटना का औचित्य सिद्ध हो सके।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वैदिक और उपनिषदिक दृष्टिकोण में, कर्मों के फल का विचार है, और कर्मों का प्रतिफल स्वीकृत करने के लिए तात्त्विक और तार्किक आधार प्रदान किया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** बिना किसी कारण या प्रमाण के इस आयत में एक परिणाम की भविष्यवाणी की गई है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।

आयत 17: फिर जिस वक़्त तुम लोगों की शाम हो और जिस वक़्त तुम्हारी सुबह हो ख़ुदा की पाकीज़गी ज़ाहिर करो

चुना गया न्याय तत्व: Upamana (तुलना)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** शाम और सुबह के समय ख़ुदा की पाकीज़गी का उल्लेख करो।
- **हेतु (Reason):** इस आयत का उद्देश्य एक सामान्य धार्मिक क्रिया को निर्देशित करना है, लेकिन इसे तात्त्विक या तार्किक रूप से सिद्ध नहीं किया गया है। यह केवल एक क्रिया के पालन के लिए आदेश दिया गया है, जिसमें कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया गया।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से योग दर्शन में, समय का महत्व समझाया गया है, और दिन के विशेष समय का महत्व है, लेकिन वह भी मानसिक स्थिति और भक्ति के संदर्भ में समझाया गया है।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत किसी विशेष समय में कार्य करने का निर्देश देती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या तार्किक आधार नहीं दिया गया है।

आयत 18: और सारे आसमान व ज़मीन में तीसरे पहर को और जिस वक़्त तुम लोगों की दोपहर हो जाए वही क़ाबिले तारीफ़ है

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (व्याप्ति)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** तीसरे पहर और दोपहर के समय की विशेषता को क़ाबिले तारीफ़ (प्रशंसनीय) बताया गया है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत विशेष समय की प्रशंसा करती है, लेकिन बिना किसी तात्त्विक या कारणात्मक आधार के। व्याप्ति के सिद्धांत के अनुसार, किसी समय विशेष की महत्वता को साबित करने के लिए उस समय के गुण या कारण का स्पष्ट रूप से उल्लेख होना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय योग दर्शन में, विशेष समय पर ध्यान और साधना की विशेष महत्वता बताई गई है, लेकिन इसके साथ कारण और तात्त्विक आधार स्पष्ट रूप से दिए गए हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल एक समय विशेष को महत्वपूर्ण मानती है, लेकिन उसके कारण का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं देती, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 19: वही ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और वही मुर्दे को जिन्दा से पैदा करता है और ज़मीन को मरने (परती होने) के बाद ज़िन्दा (आबाद) करता है और इसी तरह तुम लोग भी (मरने के बाद निकाले जाओगे)

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (प्रमाण)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ख़ुदा ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और इसी तरह आदमी को मरने के बाद पुनः जीवित करेगा।
- **हेतु (Reason):** यह दावा बिना किसी प्रमाण के किया गया है। न्याय दर्शन में, किसी घटना के होने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है, जो यहाँ अनुपस्थित है।

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से संख्यायोग में पुनर्जन्म और आत्मा के शाश्वतता का विचार है, जिसे प्रमाण और अनुभवजन्य दृष्टिकोण से समझाया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना किसी प्रमाण के पुनर्जीवन की अवधारणा प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 20: और उस (की कुदरत) की निशानियों में ये भी है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर यकायक तुम आदमी बनकर (ज़मीन पर) चलने फिरने लगे

चुना गया न्याय तत्व: Pratyaksha (प्रत्यक्ष)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ख़ुदा ने इंसान को मिट्टी से पैदा किया और उसे चलने फिरने योग्य बनाया।
- **हेतु (Reason):** यह आयत एक आम धार्मिक विश्वास को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसके लिए कोई प्रत्यक्ष प्रमाण या अनुभव नहीं दिया गया है। न्याय दर्शन में, किसी घटना का प्रमाण प्रत्यक्ष अनुभव से होना चाहिए, न कि केवल विश्वास के आधार पर।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, जैसे कि सांख्य योग में, जीव के उत्पत्ति और विकास की प्रक्रिया पर विस्तार से चर्चा की गई है, जिसे प्रमाणों के साथ जोड़ा गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना किसी तात्त्विक प्रमाण के प्राकृतिक उत्पत्ति की प्रक्रिया का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	Hetu	कारण का स्पष्ट अभाव।
17	Upamana	कोई तात्त्विक आधार नहीं।
18	Vyapti	समय की विशेषता का कोई प्रमाण नहीं।
19	Pramana	प्रमाण की अनुपस्थिति।
20	Pratyaksha	प्रत्यक्ष प्रमाण का अभाव।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तात्त्विक और प्रमाणिक आधार की कमी है। हर आयत किसी न किसी विशेष घटना या विश्वास को प्रस्तुत करती है, लेकिन वह न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है, क्योंकि इनमें कारण, प्रमाण, और अनुभवजन्य आधार की स्पष्टता का अभाव है। इन आयतों का दावा तर्क और तात्त्विक दृष्टिकोण से अपर्याप्त प्रतीत होता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 21: और उसी की (कुदरत) की निशानियों में से एक ये (भी) है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी ही जिन्स की बीवियाँ पैदा की ताकि तुम उनके साथ रहकर चैन करो और तुम लोगों के दरमेयान प्यार और उलफ़त पैदा कर दी इसमें शक नहीं कि इसमें ग़ौर करने वालों के वास्ते (कुदरते ख़ुदा की) यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (कारण)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा ने पुरुष और महिला के बीच प्यार और उल्फ़त पैदा करने के लिए एक व्यवस्था बनाई है।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में ख़ुदा की कृपा के रूप में इस व्यवस्था को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह तात्त्विक आधार से स्पष्ट नहीं किया गया है कि क्यों केवल एक विशेष जेंडर के बीच यह उल्फ़त उत्पन्न होती है। न्याय दर्शन में, किसी घटना के कारण का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जैसे कि संस्कृत में व्यक्तित्व के विकास और आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया को जोड़ा गया है, वह मानव जीवन के संबंधों को भी तात्त्विक रूप से समझाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक सामान्य धार्मिक दावे को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसके लिए कोई तात्त्विक या तार्किक आधार नहीं दिया गया है।**

आयत 22: और उस (की कुदरत) की निशानियों में आसमानो और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानो और रंगतो का एख़्तेलाफ भी है यकीऩन इसमें वाक़िफकारों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (व्याप्ति)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आसमान और ज़मीन का उत्पत्ति और मानव विविधता (भाषाएँ और रंग) ख़ुदा की निशानियाँ हैं।
- **हेतु (Reason):** यह आयत दावे करती है कि विभिन्न भाषाओं और रंगों का अस्तित्व ख़ुदा के प्रमाण हैं, लेकिन इसके कारणों का कोई स्पष्ट तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से सांख्य और वेदांत में, विविधता और उसके कारणों का विश्लेषण किया गया है। वहां इस विविधता को कर्मों, प्रकृति के गुणों और दैवी शक्तियों के साथ जोड़ा गया है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में केवल विविधता का अस्तित्व बताया गया है, लेकिन इसके लिए कोई प्रमाण या कारण नहीं दिया गया है, जो न्याय दर्शन में आवश्यक है।

आयत 23: और रात और दिन को तुम्हारा सोना और उसके फज़ल व करम (रोज़ी) की तलाश करना भी उसकी (कुदरत की) निशानियों से है बेशक जो लोग सुनते हैं उनके लिए इसमें (कुदरते ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

चुना गया न्याय तत्व: Pratyaksha (प्रत्यक्ष)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** दिन और रात की व्यवस्था और रोज़ी की तलाश को ख़ुदा की निशानी बताया गया है।
- **हेतु (Reason):** यहाँ प्रत्यक्ष रूप से यह कहा गया है कि दिन और रात की व्यवस्था और जीवन की बुनियादी आवश्यकता (रोज़ी) ख़ुदा की निशानी हैं, लेकिन इसका कोई तात्त्विक आधार या कारण नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, जैसे कि वेदांत और सांख्य में, दिन-रात की प्रक्रिया और जीवन की आवश्यकताओं को प्रकृति और चित्त के साथ जोड़ा गया है। यह दर्शन से प्रमाणित होता है

कि समय की प्रक्रिया और जीवन की प्राथमिकताएँ भौतिक और मानसिक कारणों से संचालित होती हैं।

- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 24: और उसी की (क़ुदरत की) निशानियों में से एक ये भी है कि वह तुमको डराने वाला उम्मीद लाने के वास्ते बिजली दिखाता है और आसमान से पानी बरसाता है और उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके परती होने के बाद आबाद करता है बेशक अक़्लमंदों के वास्ते इसमें (क़ुदरते ख़ुदा की) बहुत सी दलीलें हैं

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (प्रमाण)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ख़ुदा की निशानियाँ बिजली, बारिश और ज़मीन की उपज में हैं, जो अक्लमंदों के लिए प्रमाण हैं।
- **हेतु (Reason):** यह आयत प्राकृतिक घटनाओं को ख़ुदा की निशानियाँ और दलीलें बताती है, लेकिन यह दावे बिना किसी प्रमाण या वैज्ञानिक तर्क के किए गए हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, जैसे कि पतंजलि के योगसूत्रों में प्रकृति और उसके प्रभाव को तात्त्विक रूप से समझाया गया है, जिसमें उन घटनाओं के भीतर ब्रह्म के संकेत हैं, और यह बिना किसी भ्रम के प्रमाणित होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना प्रमाण के प्राकृतिक घटनाओं को एक धार्मिक विश्वास के रूप में प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 25: और उसी की (क़ुदरत की) निशानियों में से एक ये भी है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं फिर (मरने के बाद) जिस वक़्त तुमको एक बार बुलाएगा तो तुम सबके सब ज़मीन से (ज़िन्दा हो होकर) निकल पड़ोगे

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (व्याप्ति)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ख़ुदा के हुक्म से आसमान और ज़मीन स्थिर हैं और वह मृत्यु के बाद सभी को पुनः जीवित करेगा।
- **हेतु (Reason):** यह आयत मृत्यु और पुनरुत्थान के दावे को बिना किसी प्रमाण के प्रस्तुत करती है। न्याय दर्शन में, किसी घटना या दावे का तात्त्विक और प्रमाणिक आधार आवश्यक होता है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत में, पुनर्जन्म और आत्मा के चिरस्थायित्व का विचार तात्त्विक प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना किसी प्रमाण के पुनरुत्थान की अवधारणा को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	Hetu	कारण का स्पष्ट अभाव।
22	Vyapti	व्याप्ति का कोई प्रमाण नहीं।
23	Pratyaksha	प्रत्यक्ष प्रमाण का अभाव।
24	Pramana	प्रमाण की अनुपस्थिति।
25	Vyapti	व्याप्ति का कोई प्रमाण नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में ख़ुदा की निशानियों के रूप में प्राकृतिक घटनाओं और जीवन की प्रक्रियाओं को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इनका तात्त्विक और प्रमाणिक आधार स्पष्ट नहीं किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का कारण और प्रमाण स्पष्ट होना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है। इन आयतों में धार्मिक विश्वास और प्राकृतिक घटनाओं के बीच का संबंध बिना प्रमाण के स्थापित किया गया है, जिससे उनका तार्किक आधार कमजोर प्रतीत होता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 26

आयत का अनुवाद:

"और जो लोग आसमानों में हैं, सब उसी के हैं और सब उसी के ताबेए फरमान हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): "आसमानों में जो भी है, वह ईश्वर का है और सब कुछ उसी के फरमान का पालन करता है।"**
- **हेतु (Reason): इस आयत में यह दावा किया गया है कि आसमान और उसमें सब कुछ ईश्वर का है और वह सबका नियंत्रक है। यह दावा तार्किक और प्रमाणिक तरीके से स्थापित नहीं किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेषकर वेदांत और सांख्य योग में, ब्रह्म और प्रकृति के बीच अंतर किया जाता है। ब्रह्म सर्वशक्तिमान है, लेकिन प्रकृति अपनी स्वाभाविक गतियों के अनुसार कार्य करती है, जो ईश्वर के निर्णय से स्वतंत्र हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से जुड़ी नहीं है, क्योंकि इसमें ईश्वर के प्रति दावे का कोई तार्किक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है। इसे केवल विश्वास के आधार पर प्रस्तुत किया गया है, जो सार्वभौमिक तर्क के खिलाफ है।**

आयत 27

आयत का अनुवाद:

"वह ऐसा (क़ादिरे मुत्तलिक़ है जो मख़लूकात को पहली बार पैदा करता है फिर दोबारा (क़यामत के दिन) पैदा करेगा और ये उस पर बहुत आसान है और सारे आसमान व ज़मीन सबसे बालातर उसी की शान है और वही (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): "ईश्वर मखलूकात को पहले पैदा करता है और फिर क़यामत में दोबारा पैदा करेगा, यह उस पर बहुत आसान है।"**

- **हेतु (Reason):** यह आयत पुनर्जीवन और सृष्टि के एक नई प्रक्रिया का दावा करती है, लेकिन इसमें किसी प्रकार का प्रमाण या अनुभव नहीं प्रस्तुत किया गया है। इसे केवल विश्वास के आधार पर कहा गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन के अनुसार, पुनर्जन्म का विचार कर्म के आधार पर होता है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणिक होता है। किन्तु इस आयत में किसी तर्क या प्रमाण के बिना सृष्टि और पुनर्जन्म का दावा किया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें कोई अनुभव या वैज्ञानिक आधार नहीं है, केवल एक धार्मिक विश्वास है।

आयत 28

आयत का अनुवाद:

"हमने (तुम्हारे समझाने के वास्ते) तुम्हारी ही एक मिसाल बयान की है। हमने जो कुछ तुम्हे अता किया है क्या उसमें तुम्हारी लौन्डी ग़ुलामों में से कोई (भी) तुम्हारा शरीक है कि (वह और) तुम उसमें बराबर हो जाओ?"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "क्या तुम अपनी लौंडियों और ग़ुलामों को अपने साथ बराबरी पर मानते हो?"
- **हेतु (Reason):** यह आयत सिद्ध करती है कि किसी व्यक्ति को खुदा के शरीक बनाने का विचार तर्कहीन है, क्योंकि इंसान और ईश्वर के बीच कोई समानता नहीं हो सकती।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता (Chapter 7, Shloka 22) में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि केवल परमात्मा ही सर्वोत्तम है और कोई अन्य वस्तु या व्यक्ति उसकी समानता नहीं हो सकता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के अनुसार गलत है, क्योंकि ईश्वर और किसी इंसान के बीच कोई समानता नहीं हो सकती, और यह तर्क भारतीय दर्शन में भी स्पष्ट है।

आयत 29

आयत का अनुवाद:

"मगर सरकशों ने तो बग़ैर समझे बूझे अपनी नफ़सियानी ख़्वाहिशों की पैरवी कर ली (और ख़ुदा का शरीक ठहरा दिया)।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "जो लोग अपनी इच्छाओं का पालन करते हैं, वे ख़ुदा के शरीक ठहरा देते हैं।"
- **हेतु (Reason):** यह दावा करता है कि लोग अपनी इच्छाओं का पालन करने से गुमराह हो जाते हैं और ईश्वर को शरीक ठहरा देते हैं। यह विचार मानव स्वभाव और तर्क के विपरीत है, क्योंकि लोग अक्सर तर्क और प्रमाण के आधार पर ही किसी विश्वास पर पहुँचते हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन, विशेषकर सांख्य योग में, इच्छाओं और वासनाओं को केवल मानसिक प्रवृत्तियाँ माना जाता है, जो आत्मा के ज्ञान में बाधक होती हैं, लेकिन यह उन्हें गुमराह करने के बजाय आत्मा की चेतना की ओर मार्गदर्शन करती हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत उचित तर्क के आधार पर गलत है, क्योंकि इसमें यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि लोग केवल नफ़सियानी इच्छाओं के कारण गुमराह होते हैं, जो भारतीय दर्शन के विपरीत है।

आयत 30
आयत का अनुवाद:
"तो (ऐ रसूल) तुम बातिल से कतरा के अपना रुख़ दीन की तरफ़ किए रहो यही ख़ुदा की बनावट है जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "ईश्वर की बनावट से कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत दावा करती है कि ईश्वर की बनावट स्थिर और अपरिवर्तनीय है। यह विचार तात्त्विक दृष्टिकोण से विवादास्पद है क्योंकि प्रकृति और सृष्टि का चक्र निरंतर परिवर्तनशील है।
- **उदाहरण (Example):** वेदांत में यह सिद्धांत है कि ब्रह्म साकार और निराकार दोनों रूपों में मौजूद है, और ब्रह्म का स्वरूप स्थिर नहीं है।

- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह सृष्टि और ब्रह्म के अपरिवर्तनीय रूप के विचार को बिना प्रमाण के प्रस्तुत करती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	प्रमेय	आसमान और मखलूकात के ईश्वर के अधीन होने का दावा प्रमाणहीन है।
27	प्रमाण	पुनर्जन्म और सृष्टि की अवधारणाएं तर्क और प्रमाण के बिना हैं।
28	व्याप्ति	ईश्वर और इंसान के बीच समानता का कोई तर्क नहीं है।
29	हेतु	इच्छाओं का पालन करने से गुमराही और शरीक ठहराने का विचार तर्कसंगत नहीं है।
30	प्रमेय	ईश्वर की बनावट अपरिवर्तनीय नहीं है, यह तात्त्विक दृष्टिकोण से गलत है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तार्किक और प्रमाणिक आधार पर कई विवादास्पद दावे किए गए हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांत, जैसे प्रमेय, प्रमाण, और तर्क, का पालन नहीं किया गया है। इन आयतों में प्रस्तुत विचार तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर और अप्रमाणित हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 31
आयत का अनुवाद:
"उसी की तरफ़ रुजू होकर (ख़ुदा की इबादत करो) और उसी से डरते रहो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और मुशरेकीन से न हो जाना।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "ख़ुदा की इबादत करो और मुशरेकीन से बचो।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत यह समझाने की कोशिश करती है कि सिर्फ़ एक ही ईश्वर की पूजा करनी चाहिए और अन्य ईश्वर की पूजा (शिर्क) से बचना चाहिए। हालांकि, इस विचार का कोई अनुभवजन्य या तात्त्विक समर्थन नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेषकर वेदांत में, यह स्वीकार किया गया है कि ब्रह्म एक है, लेकिन उसके विभिन्न रूप और अभिव्यक्तियाँ हो सकती हैं। इसलिए एक ही ईश्वर को पूजा करना जरूरी नहीं कि अन्य रूपों की पूजा से बचने का कारण हो।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से पूरी तरह मेल नहीं खाती, क्योंकि किसी एक ईश्वर की पूजा का विचार अनुभवजन्य रूप से प्रमाणित नहीं किया गया है, और विभिन्न दर्शन इसे अन्यथा मानते हैं।

आयत 32
आयत का अनुवाद:
"जिन्होंने अपने (असली) दीन में तफरेक़ा परवाज़ी की और मुख़्तलिफ़ फिरक़े के बन गए जो (दीन) जिस फिरक़े के पास है उसी में निहाल है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "जो लोग विभिन्न धार्मिक संप्रदायों में विभाजित हो गए हैं, वे अपने मत के अनुसार निहाल हैं।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत दावा करती है कि लोग अपने-अपने धर्म में विभाजित हो गए हैं और उनमें से हर एक अपने मत में सही है। हालांकि, इस विचार का कोई तर्कसंगत आधार नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेषकर न्याय दर्शन में, हर तर्क को प्रमाण के आधार पर सत्य माना जाता है। धार्मिक विविधता के बावजूद, सत्य का पथ एक ही होता है और यह प्रमाणिक और तर्कसंगत होना चाहिए।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तर्क के खिलाफ है, क्योंकि हर मत को सत्य मानने का कोई प्रमाण नहीं है और इसके लिए कोई तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 33

आयत का अनुवाद:

"और जब लोगों को कोई मुसीबत छू भी गयी तो उसी की तरफ़ रुजू होकर अपने परवरदिगार को पुकारने लगते हैं फिर जब वह अपनी रहमत की लज़्ज़त चखा देता है तो उन्हीं में से कुछ लोग अपने परवरदिगार के साथ शिर्क करने लगते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "लोग मुसीबत के समय ईश्वर को पुकारते हैं, लेकिन जब उन्हें आराम मिलता है, तो वे शिर्क करने लगते हैं।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत यह व्यक्त करती है कि लोग मुसीबत के समय सिर्फ़ ईश्वर को पुकारते हैं, लेकिन जब उन्हें राहत मिलती है तो वे फिर से अन्य देवताओं की पूजा करने लगते हैं। यह विचार तात्त्विक दृष्टिकोण से विवादास्पद है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेषकर भगवद गीता में, भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि जो लोग संकट के समय ईश्वर को याद करते हैं, वे सच्चे भक्त होते हैं, और उनकी पूजा और साधना का मार्ग निरंतर चलने वाला है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के खिलाफ है, क्योंकि यहाँ लोगों की अस्थिर श्रद्धा और ईश्वर के साथ संबंध को आलोचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि भारतीय दर्शन में संकट के समय से भी ईश्वर के साथ संबंध मजबूत करने की बात की जाती है।

आयत 34

आयत का अनुवाद:

"ताकि जो (नेअमत) हमने उन्हें दी है उसकी नाशुक्री करें ख़ैर (दुनिया में चन्दरोज़ चैन कर लो) फिर तो बहुत जल्द (अपने किए का मज़ा) तुम्हे मालूम ही होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: "लोगों को जो नेमत दी गई है, वे उसकी नाशुक्री करते हैं और जल्दी ही परिणाम भुगतेंगे।"
- **हेतु (Reason)**: यह आयत दावा करती है कि लोग अपने भोगों का नाशुक्री करते हैं और उनके परिणामस्वरूप उन्हें दंड मिलेगा। इस विचार को तर्कसंगत तरीके से प्रमाणित नहीं किया गया है।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में, विशेषकर कर्म सिद्धांत में, यह माना जाता है कि हर व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार परिणाम भुगतता है। कर्मों का हिसाब परमात्मा या आत्मा के स्तर पर होता है, लेकिन यह दंड और पुरस्कार का विचार नहीं केवल नाशुक्री का विचार है।
- **निगमन (Conclusion)**: यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें किसी स्पष्ट प्रमाण के बिना नाशुक्री और उसके परिणाम का दावा किया गया है।

आयत 35
आयत का अनुवाद:
"क्या हमने उन लोगों पर कोई दलील नाज़िल की है जो उस (के हक़ होने) को बयान करती है जिसे ये लोग ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं (हरग़िर नहीं)।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: "क्या हमने उन लोगों पर कोई दलील नाजिल की है जो ईश्वर के शरीक ठहराते हैं?"
- **हेतु (Reason)**: इस आयत में यह दावा किया गया है कि कोई प्रमाण नहीं दिया गया है जो ईश्वर के शरीक ठहराने को सही ठहराए। हालांकि, इस दावे का खुदा का कोई प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में, विशेषकर वेदांत में, ब्रह्म के सर्वोच्च होने की बात की जाती है, और उसके सामने किसी अन्य शक्ति का अस्तित्व प्रमाणित नहीं किया गया है। लेकिन इस सिद्धांत को किसी बाहरी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह आत्मज्ञान पर आधारित है।
- **निगमन (Conclusion)**: यह आयत प्रमाण के सिद्धांत को नकारने का प्रयास करती है, जबकि भारतीय दर्शन में ईश्वर के सर्वोच्च होने का प्रमाण आत्मज्ञान और तात्त्विक दृष्टिकोण से दिया जाता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	प्रमेय	एक ईश्वर की पूजा का विचार प्रमाणिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से सही नहीं है।
32	हेतु	विभिन्न धार्मिक मतों को समान सत्य मानने का कोई तर्क नहीं है।
33	व्याप्ति	शिर्क का आरोप और अस्थिर श्रद्धा का विचार तर्कसंगत नहीं है।
34	प्रमाण	नाशुक्री और उसके परिणाम का कोई प्रमाण नहीं है।
35	प्रमाण	शरीक ठहराने के खिलाफ कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचारों में तर्क और प्रमाण के अभाव को देखा जा सकता है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन आयतों में प्रस्तुत धार्मिक विचारों का कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है, और कई जगह यह विचार तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 36
आयत का अनुवाद:
"और जब हमने लोगों को (अपनी रहमत की लज़्ज़त) चखा दी तो वह उससे खुश हो गए और जब उन्हें अपने हाथों की अगली कारसतानियों की बदौलत कोई मुसीबत पहुँची तो यकबारगी मायूस होकर बैठे रहते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "लोगों को ख़ुदा की रहमत मिलने पर खुशी और कठिनाई में मायूसी होती है।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत इस बात को व्यक्त करती है कि लोग मुश्किलों से घबराकर मायूस हो जाते हैं, जबकि उन्हें यह समझना चाहिए कि यह जीवन का हिस्सा है। हालांकि, यह विचार यह सवाल

उठाता है कि क्या जीवन के उतार-चढ़ाव के दौरान लोगों की खुशी और मायूसी का कारण सिर्फ़ भगवान की कृपा या दंड है?

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेषकर भगवद गीता में, भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि सुख और दुख जीवन के चक्र का हिस्सा हैं और हमें इन्हें योग के साथ सामना करना चाहिए।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि यह मानती है कि लोगों का सुख और दुख सिर्फ़ ईश्वर की कृपा पर निर्भर है, जबकि भारतीय दर्शन में जीवन के उतार-चढ़ाव के पीछे अन्य कारण भी हो सकते हैं।

आयत 37

आयत का अनुवाद:

"क्या उन लोगों ने (इतना भी) ग़ौर नहीं किया कि ख़ुदा ही जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और (जिसकी चाहता है) तंग करता है-कुछ शक नहीं कि इसमें इमानदार लोगों के वास्ते (कुदरत ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "ख़ुदा ही रोज़ी देता है और उसे तंग भी कर सकता है, यह एक कुदरती निशानी है।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत दावा करती है कि भगवान ही हमारी किस्मत और रोज़ी का निर्धारण करते हैं, लेकिन इस विचार का कोई बाह्य प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेषकर कर्म सिद्धांत में, यह माना जाता है कि व्यक्ति के कर्मों के अनुसार उसे फल मिलता है, और इसे बाह्य सिद्धांत और प्रमाण द्वारा भी समर्थित किया जा सकता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसमें किसी बाह्य प्रमाण का संदर्भ नहीं दिया गया है, और कर्म के सिद्धांत को नकारा गया है, जो भारतीय दर्शन में प्रमुख है।

आयत 38

आयत का अनुवाद:

"(तो ऐ रसूल अपनी) क़राबतदार (फातिमा ज़हरा) का हक़ फिदक़ दे दो और मोहताज व परदेसियों का (भी)

जो लोग ख़ुदा की ख़ुशनूदी के ख़्वाहाँ हैं उन के हक़ में सब से बेहतर यही है और ऐसे ही लोग आख़ेरत में दिली मुरादे पाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): "फ़ातिमा ज़हरा और मोहताजों का हक़ फिदक दिया जाए, यह ख़ुदा की ख़ुशनूदी का कारण है।"
- हेतु (Reason): इस आयत का उद्देश्य यह है कि जो लोग ख़ुदा की ख़ुशनूदी की तलाश करते हैं, उन्हें अपने क़राबतदार और मोहताजों का हक़ देना चाहिए। हालांकि, यह विचार केवल कुछ निश्चित व्यक्तियों के अधिकार को सर्वोच्च मानता है, जो कि तात्त्विक दृष्टिकोण से उचित नहीं है।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेषकर न्याय दर्शन में, हर व्यक्ति को उसके कर्म और अधिकार के अनुसार सम्मान दिया जाता है, और यह विचार किसी विशेष समूह या व्यक्ति के लिए प्राथमिकता देने से बचता है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर है क्योंकि इसमें विशेष व्यक्तियों के हक़ को सर्वोच्च मानने की अवधारणा है, जो न्याय और समानता के सिद्धांत के खिलाफ है।

आयत 39
आयत का अनुवाद:
"और तुम लोग जो सूद देते हो ताकि लोगों के माल (दौलत) में तरक्क़ी हो तो (याद रहे कि ऐसा माल) ख़ुदा के यहाँ फूलता फलता नहीं और तुम लोग जो ख़ुदा की ख़ुशनूदी के इरादे से ज़कात देते हो तो ऐसे ही लोग (ख़ुदा की बारगाह से) दूना दून लेने वाले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): "जो लोग सूद लेते हैं, उनका धन ख़ुदा के पास फलता नहीं है, लेकिन जो ज़कात देते हैं, वे दूना फल प्राप्त करेंगे।"
- हेतु (Reason): यह आयत सूद और ज़कात के सिद्धांतों की तुलना करती है, लेकिन यह बिना किसी प्रमाण के सूद को नकारती है और ज़कात को पुण्य के रूप में प्रस्तुत करती है। भारतीय दर्शन

में, विशेषकर व्यापार और समाजिक कर्मों में, सूद का लेन-देन कुछ परिस्थितियों में स्वीकार्य होता है, जैसे कि व्यापारिक लाभ के लिए।

- उदाहरण (Example): भारतीय समाज में, विभिन्न प्रकार के ऋण के सिद्धांत होते हैं, और वे यह स्वीकार करते हैं कि सूद का व्यापार कई बार आर्थिक विकास में सहायक होता है, बशर्ते उसका दुरुपयोग न हो।
- निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि सूद के संदर्भ में कोई प्रमाण या साक्ष्य नहीं प्रस्तुत किया गया है, और यह भारतीय व्यावासिक सिद्धांतों के खिलाफ जाती है।

आयत 40

आयत का अनुवाद:

"ख़ुदा वह (क़ादिर तवाना है) जिसने तुमको पैदा किया फिर उसी ने रोज़ी दी फिर वही तुमको मार डालेगा फिर वही तुमको (दोबारा) ज़िन्दा करेगा भला तुम्हारे (बनाए हुए ख़ुदा के) शरीकों में से कोई भी ऐसा है जो इन कामों में से कुछ भी कर सके जिसे ये लोग (उसका) शरीक बनाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): "ख़ुदा ही है जो जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म का कारण है, और कोई अन्य नहीं कर सकता।"
- हेतु (Reason): यह आयत दावा करती है कि केवल ख़ुदा ही इन कार्यों को करने में सक्षम है, और कोई अन्य ईश्वर इसे नहीं कर सकता। इस विचार को व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह आत्मज्ञान और शास्त्रों में विद्यमान कई विचारों से विरोधाभासी है।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेषकर वेदांत में, ब्रह्म को सर्वोच्च सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन पुनर्जन्म और मृत्यु के सिद्धांत को एक मानसिक और आत्मिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह मानती है कि केवल एक ही ईश्वर पुनर्जन्म और मृत्यु का कारण हो सकता है, जबकि अन्य भारतीय दृष्टिकोणों में यह प्रक्रिया आत्मज्ञान और कर्म के सिद्धांत पर आधारित होती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	प्रमेय	जीवन के उतार-चढ़ाव का कारण सिर्फ़ ईश्वर की कृपा नहीं हो सकता; अन्य कारक भी होते हैं।
37	प्रमाण	कर्म के सिद्धांत को नकारते हुए, केवल ईश्वर के हाथ में रोज़ी को मानना प्रमाणिक नहीं है।
38	हेतु	क़राबतदार और मोहताजों के हक़ को सर्वोच्च मानने की अवधारणा न्याय और समानता के खिलाफ है।
39	प्रमाण	सूद और ज़कात के बीच कोई प्रमाण या साक्ष्य नहीं दिया गया है।
40	व्याप्ति	केवल एक ईश्वर के हाथ में जीवन और मृत्यु का होना, भारतीय दर्शन में विद्यमान अन्य विचारों के खिलाफ है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचारों में भी कई जगह तार्किक और प्रमाणिक कमजोरियाँ पाई जाती हैं। विशेष रूप से, आयतों में कर्म और न्याय के सिद्धांतों को नकारा गया है, और एकतरफा ईश्वर की सत्ता का बयान किया गया है। भारतीय दर्शन में इन आयतों के विचारों के खिलाफ पर्याप्त प्रमाण और तर्क मौजूद हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 41

आयत का अनुवाद:

"वह उससे पाक व पाकीज़ा और बरतर है ख़ुद लोगों ही के अपने हाथों की कारस्तानियों की बदौलत ख़ुश्क व तर में फ़साद फैल गया ताकि जो कुछ ये लोग कर चुके हैं ख़ुदा उन को उनमें से बाज़ करतूतों का मज़ा चखा दे ताकि ये लोग अब भी बाज़ आएँ।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: "लोगों के अपने हाथों की करतूतों से दुनिया में فساد फैल रहा है, और ख़ुदा उनको सजा दे रहा है।"
- **हेतु (Reason)**: इस आयत का उद्देश्य यह बताना है कि लोग अपनी गलतियों के कारण बुरे परिणाम भुगत रहे हैं। हालांकि, यह विचार केवल गलतियों के परिणामों को दैवीय दृष्टिकोण से जोड़ता है और यह सवाल उठाता है कि क्या यह हर समस्या का समाधान है?
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में, विशेषकर कर्म सिद्धांत में, यह माना जाता है कि व्यक्ति को उसके कर्मों का फल मिलता है, लेकिन यह भी कहा गया है कि भगवान कभी-कभी अपने भक्तों को परीक्षाएँ देता है ताकि वे उसे और अधिक जान सकें।
- **निगमन (Conclusion)**: यह आयत एकतरफा दैवीय सजा के विचार को प्रस्तुत करती है, जबकि भारतीय दर्शन में दैवीय कृपा, परीक्षा और आत्मज्ञान की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इस कारण से यह आयत सभी परिस्थितियों के लिए उपयुक्त नहीं प्रतीत होती।

आयत **42**

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ज़रा रुए ज़मीन पर चल फिरकर देखो तो कि जो लोग उसके क़ब्ल गुज़र गए उनके (अफ़आल) का अंजाम क्या हुआ उनमें से बहुतेरे तो मुशरिक ही हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

उदाहरण (Udaharana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: "अतीत में जो लोग मुशरिक थे, उनका अंत बुरा हुआ है, इसीलिए तुम भी उनके मार्ग पर न चलो।"
- **हेतु (Reason)**: यह आयत इतिहास के उदाहरणों का उपयोग कर रही है, लेकिन क्या यह केवल नकारात्मक उदाहरणों को प्रस्तुत करने का तरीका सही है? क्या सिर्फ़ मुशरिकों के बुरे अंत को देखना ही न्यायसंगत है?
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय धर्मों में यह देखा जाता है कि विभाजन और भेदभाव की बजाय, ऐतिहासिक घटनाओं से शिक्षा ली जाती है, और प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से अपने कर्मों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।
- **निगमन (Conclusion)**: यह आयत इतिहास के नकारात्मक उदाहरणों पर जोर देती है, जो कि भारतीय दर्शन के लिए उपयुक्त नहीं है, जहां प्रत्येक व्यक्ति का स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन किया जाता

है और पुराने समय की गलतियों से सीखने की बजाय उनका परिणाम दिखाना उचित नहीं माना जाता।

आयत 43

आयत का अनुवाद:

"तो (ऐ रसूल) तुम उस दिन के आने से पहले जो ख़ुदा की तरफ़ से आकर रहेगा (और) कोई उसे रोक नहीं सकता अपना रुख़ मज़बूत (और सीधे दीन की तरफ़ किए रहो उस दिन लोग (परेशान होकर) अलग अलग हो जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "यम का दिन निश्चित है, और उस दिन कोई भी शक्ति उसे रोक नहीं सकती।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत दावा करती है कि निश्चित समय पर अल्लाह का आदेश आएगा और कोई उसे रोक नहीं सकता। लेकिन यह विचार व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाता, क्योंकि भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि ब्रह्मा या परमात्मा के आदेश के अलावा भी अनेक अन्य कारणों से समय और घटनाएँ घटित होती हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेषकर वेदांत और योग में, यह विचार है कि हर घटना का कारण व्यक्ति के कर्म, मानसिक स्थिति, और ब्रह्म के निर्देशों से जुड़ा होता है, न कि केवल एक निश्चित "दिन" के आने से।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि यह केवल एक निश्चित दिन के आने पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि भारतीय दर्शन में जीवन और घटनाओं के आधार पर अधिक व्यापक दृष्टिकोण होता है।

आयत 44

आयत का अनुवाद:

"जो काफ़िर बन बैठा उस पर उस के कुफ़्र का वबाल है और जिन्होने अच्छे काम किए वह अपने ही आसाइश का सामान कर रहें है।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "काफ़िरों का सजा मिलेगी, और जो अच्छे कर्म करेंगे उन्हें उनका फल मिलेगा।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत दावा करती है कि अच्छे कर्म करने वालों को अच्छे फल और बुरे कर्म करने वालों को बुरा परिणाम मिलेगा। हालांकि, यह विचार कर्मफल के सिद्धांत को सही तरीके से प्रस्तुत नहीं करता।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेषकर न्याय दर्शन में, कर्म का फल केवल इस जन्म में नहीं बल्कि पुनर्जन्म में भी मिलता है, और यह कर्मों के आधार पर विभिन्न प्रकार से निर्धारित होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत कर्म के सिद्धांत को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करती है और भारतीय दर्शन के विस्तृत दृष्टिकोण से मेल नहीं खाती, जो पुनर्जन्म और दैवीय न्याय को भी शामिल करता है।

आयत 45
आयत का अनुवाद:
"ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम किए उनको ख़ुदा अपने फज़्ल व (करम) से अच्छी जज़ा अता करेगा वह यक़ीनन कुफ़्फ़ार से उलफ़त नहीं रखता।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "ईमान लाने वाले और अच्छे कर्म करने वाले को ईश्वर अपने करम से अच्छे फल देगा।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत कर्म के अच्छे फल की बात करती है, लेकिन यह नहीं बताती कि अच्छा काम क्या है और क्या यह हर व्यक्ति के लिए समान है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेषकर भगवद गीता में, अच्छे कर्म का अर्थ केवल बाहरी क्रियाओं से नहीं, बल्कि आंतरिक भावना और उद्देश्य से जुड़ा होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसमें अच्छे कर्मों की सटीक परिभाषा नहीं दी गई, और यह केवल बाहरी दृष्टिकोण से काम करने वालों को पुरस्कृत करने का विचार प्रस्तुत करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	हेतु	दैवीय सजा के विचार को प्रस्तुत करना, जबकि भारतीय दर्शन में परीक्षा और आत्मज्ञान की भी भूमिका है।
42	उदाहरण	नकारात्मक उदाहरणों को प्रस्तुत करना उचित नहीं, जबकि भारतीय दर्शन में शिक्षा और सुधार पर जोर दिया जाता है।
43	व्याप्ति	केवल एक निश्चित दिन के आने पर जोर देना, जबकि भारतीय दर्शन में घटनाएँ विभिन्न कारणों से घटित होती हैं।
44	प्रमाण	कर्मफल के सिद्धांत को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना, जबकि भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म और दैवीय न्याय शामिल हैं।
45	प्रमेय	अच्छे कर्मों की परिभाषा का अभाव, और कर्मों को केवल बाहरी दृष्टिकोण से पुरस्कृत करना।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचारों में भारतीय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ कुछ कमजोरियाँ हैं। खासकर कर्मफल, दैवीय सजा और सुधार के सिद्धांतों को संकीर्ण रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो भारतीय दर्शन में अधिक व्यापक और विविध दृष्टिकोणों के खिलाफ है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 46

आयत का अनुवाद:

"सी की (कुदरत) की निशानियों में से एक ये भी है कि वह हवाओं को (बारिश) की ख़ुशख़बरी के वास्ते (क़ब्ल से) भेज दिया करता है और ताकि तुम्हें अपनी रहमत की लज़्ज़त चखाए और इसलिए भी कि (इसकी बदौलत) कष्तियाँ उसके हुक्म से चल खड़ी हो और ताकि तुम उसके फज़्ल व करम से (अपनी रोज़ी) की तलाश करो और इसलिए भी ताकि तुम शुक्र करो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "ख़ुदा की कुदरत की निशानियाँ हवाओं और बारिश के रूप में प्रकट होती हैं, ताकि लोग उसकी रहमत का अनुभव करें और शुक्र करें।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत दिखाती है कि प्राकृतिक घटनाओं को अल्लाह की रहमत के रूप में देखा जा सकता है। भारतीय दर्शन में भी प्रकृति को परमात्मा की लीला के रूप में देखा जाता है, लेकिन यहाँ पर यह संकुचित दृष्टिकोण दिखाया गया है कि केवल कुदरत की घटनाओं को एक दिशा में ही देखा जाए।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत और सांख्य में, प्रकृति और ब्रह्म को अविभाज्य माना गया है, जहाँ प्रकृति के कार्यों को केवल ईश्वर की कृपा के रूप में नहीं, बल्कि उसकी स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में भी समझा जाता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत को प्रस्तुत करती है, लेकिन भारतीय दर्शन के विस्तृत दृष्टिकोण से यह विचार संकुचित प्रतीत होता है, क्योंकि यह केवल एकतरफा दृष्टिकोण को अपनाती है।

आयत 47
आयत का अनुवाद:
"औ (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले और भी बहुत से पैग़म्बर उनकी क़ौमों के पास भेजे तो वह पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मोजिज़े लेकर आए (मगर उन लोगों ने न माना) तो उन मुजरिमों से हमने (ख़ूब) बदला लिया और हम पर तो मोमिनीन की मदद करना लाज़िम था ही।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "पैग़म्बर अपनी क़ौमों के पास मोजिज़े लेकर आए, और जिन लोगों ने इन मोजिजों का विरोध किया, उन्हें सजा दी गई।"
- **हेतु (Reason):** इस आयत का उद्देश्य यह बताना है कि दैवीय न्याय में उन लोगों के लिए सजा निर्धारित है जिन्होंने ईश्वर के पैग़म्बरों की बातों को नकारा। हालांकि, यह विचार भारतीय दर्शन के

सिद्धांतों से मेल नहीं खाता, क्योंकि भारतीय दर्शन में, जैसे भगवद गीता में बताया गया है, कि ईश्वर कभी भी किसी पर दंड नहीं देता, बल्कि व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करता है।

- **उदाहरण (Example):** गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि कर्मों का फल स्वयं व्यक्ति को मिलता है, और भगवान केवल मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि भारतीय दर्शन के अनुसार किसी भी घटना के लिए दोष और सजा केवल कर्मों पर आधारित होती है, न कि केवल ईश्वर की इच्छा से।

आयत 48

आयत का अनुवाद:

"ख़ुदा ही (क़ादिर तवाना) है जो हवाओं को भेजता है तो वह बादलों को उड़ाए उड़ाए फिरती हैं फिर वही ख़ुदा बादल को जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है और (कभी) उसको टुकड़े (टुकड़े) कर देता है फिर तुम देखते हो कि बूँदियां उसके दरमियान से निकल पड़ती हैं फिर जब ख़ुदा उन्हें अपने बन्दों में से जिस पर चहता है बरसा देता है तो वह लोग ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "ख़ुदा ने हवाओं और बादलों के माध्यम से बारिश को अपनी इच्छानुसार भेजा और लोगों के लिए उसे वरदान के रूप में प्रस्तुत किया।"
- **हेतु (Reason):** इस आयत में प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या की जा रही है, लेकिन यह केवल एक पद्धति को स्वीकार करती है। भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से विज्ञान और तर्क के दृष्टिकोण से, यह देखा जाता है कि प्रकृति में होने वाली घटनाएँ कारकों के संयोजन से होती हैं, न कि केवल किसी एक दैवीय इच्छा के कारण।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण में, मौसम परिवर्तन और बारिश का कारण वायुमंडलीय परिस्थितियों और जलवायु चक्र होते हैं, जो निश्चित रूप से प्राकृतिक कारणों से जुड़े होते हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह प्राकृतिक घटनाओं को केवल दैवीय कार्य मानती है, जबकि भारतीय दर्शन में इन घटनाओं के प्राकृतिक कारणों को समझा जाता है।

आयत 49

आयत का अनुवाद:

"अगरचे ये लोग उन पर (बाराने रहमत) नाज़िल होने से पहले (बारिश से) शुरु ही से बिल्कुल मायूस (और मज़बूर) थे।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): "बारिश की रहमत के आने से पहले लोग पूरी तरह से निराश थे, लेकिन अब वे खुश हो गए हैं।"
- हेतु (Reason): इस आयत का उद्देश्य यह बताना है कि जब लोगों पर कठिनाइयाँ आती हैं, तो वे निराश हो जाते हैं, लेकिन जब ईश्वर की कृपा से स्थिति सुधरती है, तो वे खुश हो जाते हैं। हालांकि, यह विचार भारतीय दर्शन के सापेक्ष संकीर्ण हो सकता है, क्योंकि भारतीय दर्शन में माना जाता है कि मानसिक स्थिति और संतुलन का वास्तविक स्रोत आत्मज्ञान और आंतरिक शांति है, न कि बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर रहना।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से योग और वेदांत में, यह सिखाया जाता है कि व्यक्ति को बाहरी परिस्थितियों से ऊपर उठकर आत्मशक्ति और संतुलन प्राप्त करना चाहिए।
- निगमन (Conclusion): यह आयत केवल बाहरी परिस्थितियों के आधार पर खुशी और दुख को जोड़ने का विचार प्रस्तुत करती है, जबकि भारतीय दर्शन में आंतरिक शांति और संतुलन को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

आयत 50

आयत का अनुवाद:

"ग़रज़ ख़ुदा की रहमत के आसार की तरफ़ देखो तो कि वह क्योकर ज़मीन को उसकी परती होने के बाद आबाद करता है बेशक यक़ीनी वही मुर्दो का ज़िन्दा करने वाला और वही हर चीज़ पर क़ादिर है।"

चुना गया न्याय तत्व:

उदाहरण (Example)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): "ख़ुदा की रहमत से ही ज़मीन को सूखा होने के बाद फिर से हरा-भरा किया जाता है, और वही मुर्दों को ज़िन्दगी देता है।"

- **हेतु (Reason):** यह आयत प्राकृतिक घटनाओं और जीवन के पुनर्जन्म को दैवीय कार्य मानती है। भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म और प्रकृति के पुनर्संस्कार का विचार व्यापक रूप से समझा जाता है, लेकिन यह केवल दैवीय इच्छा पर केंद्रित नहीं होता।
- **उदाहरण (Example):** वेदांत और सांख्य दर्शन में, पुनर्जन्म को कर्मों का परिणाम माना जाता है, और प्रकृति के पुनर्संस्कार को भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा जाता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से संकीर्ण हो सकती है, क्योंकि इसमें दैवीय तत्व को ही कारण माना गया है, जबकि भारतीय दर्शन में इन घटनाओं को एक जटिल और सांविधानिक दृष्टिकोण से देखा जाता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	प्रमेय	यह विचार संकुचित है, क्योंकि भारतीय दर्शन में प्राकृतिक घटनाओं को केवल दैवीय कृपा से नहीं, बल्कि उनकी स्वाभाविक प्रक्रिया से भी देखा जाता है।
47	व्याप्ति	कर्म और न्याय के सिद्धांत के अनुसार, सजा केवल दैवीय इच्छा से नहीं, बल्कि कर्मों के परिणाम से होती है।
48	प्रमाण	प्राकृतिक घटनाओं को केवल दैवीय कार्य मानना भारतीय विज्ञान और तर्क के दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता।
49	हेतु	बाहरी घटनाओं पर निर्भरता को बढ़ावा देता है, जबकि भारतीय दर्शन में आंतरिक संतुलन और आत्मज्ञान पर जोर दिया जाता है।
50	उदाहरण	केवल दैवीय इच्छा के आधार पर जीवन और पुनर्संस्कार को देखना भारतीय दर्शन के व्यापक दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दी गई प्राकृतिक घटनाओं और दैवीय कार्यों की व्याख्या भारतीय दर्शन के तत्वज्ञान और विज्ञान के दृष्टिकोण से संकीर्ण प्रतीत होती है। भारतीय दर्शन में कर्म, पुनर्जन्म और प्रकृति के कार्यों का एक जटिल और संतुलित दृष्टिकोण है, जो केवल दैवीय कृपा और इच्छा पर निर्भर नहीं होता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 51
आयत का अनुवाद:
"और अगर हम (खेती की नुकसान देह) हवा भेजें फिर लोग खेती को (उसी हवा की वजह से) ज़र्द (परस मुर्दा) देखें तो वह लोग इसके बाद (फ़ौरन) नाशुक्री करने लगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "यदि ख़ुदा हवा भेजता है, जिससे खेती को नुकसान हो, तो लोग इसके बाद नाशुक्री करते हैं।"
- **हेतु (Reason):** यहाँ पर प्रकृति की घटनाओं को सीधे ख़ुदा की इच्छा के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमें यह मान लिया गया कि यदि नुकसान होता है, तो यह सिर्फ़ ईश्वर की इच्छा का परिणाम है। भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से सांख्य और वेदांत में, प्रकृति और उसके घटक स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं, और कर्म के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी परिस्थिति का परिणाम व्यक्ति के कर्मों से जुड़ा होता है, न कि केवल ईश्वर की इच्छा से।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में यह कहा जाता है कि प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे कि तूफान या बारिश की कमी, प्रकृति के चक्रीय कार्यों का हिस्सा होती हैं, और यह कर्मफल के सिद्धांत के अंतर्गत आती हैं।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में प्रमेय के सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से यह संकुचित है, क्योंकि यह केवल एक दैवीय कारण को स्वीकार करता है और अन्य प्राकृतिक कारकों को नकारता है।

आयत 52
आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम तो (अपनी) आवाज़ न मुर्दों ही को सुना सकते हो और न बहरों को सुना सकते हो (ख़ुसूसन) जब वह पीठ फेरकर चले जाएँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "तुम मुर्दों और बहरों को अपनी आवाज़ नहीं सुना सकते, विशेष रूप से जब वे पीठ फेरकर चले जाएँ।"
- **हेतु (Reason):** इस आयत में यह कहा गया है कि व्यक्ति को केवल वही सुन सकता है जो तैयार हो, जबकि यह भारतीय दर्शन में नकारा जाता है। भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वेदांत और योग में, यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि आत्मज्ञान प्राप्त करने की क्षमता सभी में होती है, परंतु किसी व्यक्ति की मानसिक स्थिति और इक्षा शक्ति पर निर्भर करती है।
- **उदाहरण (Example):** गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि ज्ञान प्राप्ति की कोई सीमा नहीं है, और जो व्यक्ति मन, बुद्धि और आत्मा से तैयार होता है, वह कभी भी ज्ञान प्राप्त कर सकता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत को प्रस्तुत करती है, लेकिन भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से यह सीमित है, क्योंकि भारतीय दृष्टिकोण में ज्ञान की प्राप्ति प्रत्येक व्यक्ति के लिए संभव मानी जाती है, अगर वह मानसिक रूप से तैयार हो।

आयत 53
आयत का अनुवाद:
"और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से (फेरकर) राह पर ला सकते हो तो तुम तो बस उन्हीं लोगों को सुना (समझा) सकते हो जो हमारी आयतों को दिल से मानें फिर यही लोग इस्लाम लाने वाले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "तुम अंधों को उनकी गुमराही से सही मार्ग पर नहीं ला सकते, केवल वही लोग राह पर आते हैं जो अल्लाह की आयतों को दिल से मानते हैं।"
- **हेतु (Reason):** इस आयत में यह कहा गया है कि केवल वही लोग ईश्वर की राह पर चल सकते हैं जो अल्लाह की आयतों पर विश्वास करते हैं। भारतीय दर्शन में, हालांकि, यह विचार विपरीत है। हिंदू दर्शन में यह सिखाया जाता है कि हर व्यक्ति को अपनी आत्मा के सत्य को जानने की क्षमता है, और उसे कोई बाहरी मार्गदर्शन नहीं चाहिए, क्योंकि आत्मा स्वयं ही सत्य की दिशा में अग्रसर होती है।

- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि सच्चा ज्ञान आत्मा के भीतर ही स्थित है और बाहरी रूप से किसी अन्य से इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत को प्रस्तुत करती है, लेकिन भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से यह विचार संकुचित प्रतीत होता है, क्योंकि भारतीय विचारधारा में आत्मज्ञान को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

आयत 54
आयत का अनुवाद:
"ख़ुदा ही तो है जिसने तुम्हें (एक निहायत) कमज़ोर चीज़ (नुत्फे) से पैदा किया फिर उसी ने (तुम में) बचपने की कमज़ोरी के बाद (शबाब की) क़ूवत अता की फिर उसी ने (तुममें जवानी की) क़ूवत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा पैदा कर दिया वह जो चाहता पैदा करता है-और वही बड़ा वाक़िफ़कार और (हर चीज़ पर) क़ाबू रखता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "ख़ुदा वह है जिसने मनुष्य को कमजोर से शुरू किया और उसे विभिन्न अवस्थाओं में बदला।"
- **हेतु (Reason):** इस आयत में यह बताया गया है कि मनुष्य का जीवन केवल ख़ुदा की इच्छाओं से नियंत्रित होता है। भारतीय दर्शन में, हालांकि, जीवन और मृत्यु के चक्र को कर्मफल के आधार पर समझा जाता है। जीवन में विभिन्न अवस्थाओं की उत्पत्ति और परिपक्वता का कारण केवल दैवीय इच्छा नहीं है, बल्कि व्यक्ति के कर्म और साधना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने कहा कि जीव का अस्तित्व उसकी आत्मा के कर्मों के परिणामस्वरूप होता है, और प्रत्येक जन्म कर्मों का परिणाम होता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में केवल दैवीय कारण का उल्लेख किया गया है, जबकि भारतीय दर्शन में जीवन के हर पहलू को कर्मफल के सिद्धांत से जोड़ा जाता है।

आयत 55
आयत का अनुवाद:
"और जिस दिन क़यामत बरपा होगी तो गुनाहगार लोग कसमें खाएँगें कि वह (दुनिया में) घड़ी भर से ज़्यादा नहीं ठहरे यूँ ही लोग (दुनिया में भी) इफ़तेरा परदाज़ियाँ करते रहे।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "क़यामत के दिन गुनाहगार लोग अपनी सजा को हल्का करने के लिए यह दावा करेंगे कि उन्होंने कम समय बिताया था।"
- **हेतु (Reason):** यह आयत क़यामत और उसके बाद के दंड को दैवीय न्याय के रूप में देखती है। भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से गीता और वेदांत में, यह कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का स्वयं उत्तरदायी होता है, और उसका फल उसे कर्मों के अनुसार मिलता है, न कि किसी बाहरी न्याय के आधार पर।
- **उदाहरण (Example):** गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि प्रत्येक आत्मा को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है, और वह किसी और के द्वारा निर्धारित नहीं होता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह दैवीय न्याय को केवल अंतिम समय में निर्धारित करने का विचार प्रस्तुत करती है, जबकि भारतीय दर्शन में कर्मफल को जीवन भर के दौरान अनुभव किया जाता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	प्रमेय	यह विचार संकुचित है, क्योंकि भारतीय दर्शन में कर्मफल के सिद्धांत को प्राथमिकता दी जाती है, न कि केवल दैवीय इच्छा को।
52	प्रमेय	भारतीय दर्शन में सभी व्यक्तियों को ज्ञान की प्राप्ति का अवसर मिलता है, बशर्ते वे मानसिक रूप से तैयार हों।
53	प्रमेय	भारतीय दर्शन में आत्मज्ञान को महत्वपूर्ण माना जाता है, जबकि यह आयत बाहरी मार्गदर्शन पर निर्भर करती है।
54	हेतु	जीवन की अवस्थाओं का कारण कर्मफल और आत्मशक्ति होता है, न कि केवल दैवीय इच्छा।

55	प्रमाण	यह आयत दैवीय न्याय के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि भारतीय दर्शन में कर्मफल के परिणाम पूरे जीवन में अनुभव होते हैं, न कि केवल अंतिम समय में।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में व्यक्त विचार भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से संकीर्ण और एकतरफा प्रतीत होते हैं। भारतीय दर्शन में कर्म, आत्मज्ञान, और प्रकृति की प्रक्रिया को व्यापक रूप से समझा जाता है, जो केवल दैवीय इच्छा पर निर्भर नहीं होता। इन आयतों में जो विचार प्रस्तुत किए गए हैं, वे भारतीय दर्शन के सिद्धांतों के विपरीत हैं, क्योंकि वहाँ कर्मफल, आत्मा की स्वतंत्रता और प्रकृति के कार्यों को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 56
आयत का अनुवाद:
"और जिन लोगों को (ख़ुदा की बारगाह से) इल्म और ईमान दिया गया है जवाब देंगे कि (हाए) तुम तो ख़ुदा की किताब के मुताबिक़ रोज़े क़यामत तक (बराबर) ठहरे रहे फिर ये तो क़यामत का ही दिन है मगर तुम लोग तो उसका यक़ीन ही न रखते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): "क़यामत के दिन, जो लोग इल्म और ईमान रखते हैं, वे यह बताएंगे कि क़यामत का दिन निश्चित था, लेकिन तुम लोग उस पर यक़ीन नहीं करते थे।"**
- **हेतु (Reason): यह आयत क़यामत के दिन के संबंध में इस्लामिक विश्वास को प्रमाणित करती है। भारतीय दर्शन में क़यामत की अवधारणा और विशेष रूप से पुनर्जीवन और जीवन के बाद के फल की भूमिका अलग है। विशेष रूप से हिंदू दर्शन में, जीवन-मृत्यु का चक्र एक निरंतर प्रक्रिया है और आत्मा का पुनर्जन्म कर्म के आधार पर होता है, न कि केवल किसी निर्णायक क़यामत के आधार पर।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने कहा था कि आत्मा न तो पैदा होती है और न ही मरती है, यह निरंतर रूप से कर्मों के परिणामस्वरूप नए शरीर में जन्म लेती रहती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत क़यामत की एक निश्चित अवधारणा को प्रस्तुत करती है, जो भारतीय दर्शन के निरंतर जीवन और कर्म के सिद्धांत से मेल नहीं खाती। भारतीय दर्शन के**

दृष्टिकोण से, जीवन का उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना और कर्मों का सही फल प्राप्त करना है, न कि एक अंतिम क़यामत का सामना करना।

आयत 57

आयत का अनुवाद:
"तो उस दिन सरकश लोगों को न उनकी उज्र माअज़ेरत कुछ काम आएगी और न उनकी सुनवाई होगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "क़यामत के दिन, गुनाहगार लोग अपनी माअज़ेरत (बहाने) से बच नहीं पाएंगे और न उनकी कोई सुनवाई होगी।"
- **हेतु (Reason):** यहाँ पर एक निश्चित न्याय प्रणाली की बात की जा रही है, जिसमें दैवीय न्याय के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का परिणाम मिलेगा। भारतीय दर्शन में, हालांकि, यह माना जाता है कि व्यक्ति के कर्म ही उसके अगले जन्म का निर्धारण करते हैं, और एक व्यक्ति को बार-बार पुनः जन्म लेने के अवसर मिलते हैं। यह विचार क़यामत के दिन के एक निश्चित न्याय से भिन्न है।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने कहा था कि जीवन के हर कर्म का परिणाम जन्म-जन्मांतर में मिलता है, और प्रत्येक व्यक्ति को हर जन्म में अपने कर्मों के अनुसार अवसर प्राप्त होता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में दैवीय न्याय का संकुचित रूप प्रस्तुत किया गया है, जबकि भारतीय दर्शन में न्याय और कर्म के सिद्धांत को अधिक व्यापक रूप से समझा गया है।

आयत 58

आयत का अनुवाद:
"और हमने तो इस कुरआन में (लोगों के समझाने को) हर तरह की मिसाल बयान कर दी और अगर तुम उनके पास कोई सा मौजिज़ा ले आओ (तो भी) तो भी यक़ीनन कुफ़्फ़ार यही बोल उठेंगे कि तुम लोग निरे दग़ाबाज़ हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "हमने कुरान में हर तरह की मिसाल दी है, लेकिन कुफ़्फ़ार इसे नहीं मानते और उसे दग़ाबाज़ी कहते हैं।"
- **हेतु (Reason):** इस आयत में यह कहा गया है कि कुरान में दी गई मिसालों को समझाने के बावजूद लोग विश्वास नहीं करते। भारतीय दर्शन में ज्ञान को सत्य की प्राप्ति के रूप में देखा जाता है, और हर व्यक्ति के मन, बुद्धि और इच्छाओं के अनुसार वह ज्ञान को ग्रहण करता है। यह आयत उन लोगों को दोष देती है जो विश्वास नहीं करते, लेकिन भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि सत्य के प्रति प्रत्येक व्यक्ति की समझ अलग हो सकती है और किसी को जबरदस्ती विश्वास नहीं कराया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि ज्ञान को अर्जित करने के लिए अपने मन को शुद्ध करना आवश्यक है, और यह प्रक्रिया व्यक्ति की आस्था और मानसिक स्थिति पर निर्भर करती है।
- **निगमन (Conclusion):** भारतीय दर्शन के अनुसार, यह आयत ज्ञान और विश्वास के विविधताओं को नहीं समझती और उन लोगों को दोषी ठहराती है जो इसे स्वीकार नहीं करते।

आयत **59**

आयत का अनुवाद:

"तो (ऐ रसूल) तुम सब्र करो बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है और (कहीं) ऐसा न हो कि जो (तुम्हारी) तसदीक़ नहीं करते तुम्हें (बहका कर) ख़फ़ीफ़ करे दें।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** "तुम धैर्य रखो, क्योंकि ख़ुदा का वायदा सच्चा है और तुम्हें बहका कर लोग भ्रमित नहीं कर सकते।"
- **हेतु (Reason):** यहाँ धैर्य रखने का निर्देश दिया जा रहा है, लेकिन भारतीय दर्शन में व्यक्ति को अपनी मानसिक स्थिति और आस्था के आधार पर आत्मनिर्भरता सिखाई जाती है। भारतीय दर्शन में धैर्य का पालन खुद के आत्मविश्वास से जुड़ा होता है, और यह समझा जाता है कि आत्मज्ञान और मानसिक शांति से ही किसी कठिनाई का समाधान होता है।
- **उदाहरण (Example):** गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि आत्मविश्वास और सच्चे ज्ञान के माध्यम से ही जीवन की हर स्थिति का सामना किया जा सकता है।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल दैवीय वचन के भरोसे रहने का आदेश देती है, जबकि भारतीय दर्शन में व्यक्ति को अपनी आत्मा के सत्य के आधार पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता दी जाती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	हेतु	इस आयत में क़यामत की अवधारणा को प्रस्तुत किया गया है, जो भारतीय दर्शन के पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।
57	प्रमेय	आयत में दैवीय न्याय की अवधारणा प्रस्तुत की गई है, जबकि भारतीय दर्शन में न्याय और कर्म के सिद्धांत को अधिक व्यापक रूप से समझा गया है।
58	प्रमाण	इस आयत में ज्ञान और विश्वास के विविधताओं को नकारा जाता है, जबकि भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि हर व्यक्ति की समझ अलग हो सकती है।
59	हेतु	यह आयत केवल दैवीय वचन के आधार पर धैर्य रखने का निर्देश देती है, जबकि भारतीय दर्शन में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को प्राथमिकता दी जाती है।
60	हेतु	भारतीय दर्शन में आत्मज्ञान और मानसिक शांति से समस्याओं का समाधान किया जाता है, न कि केवल बाहरी विश्वास के आधार पर।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से संकुचित और दैवीय आदेश पर आधारित हैं। भारतीय दर्शन में ज्ञान, कर्मफल, पुनर्जन्म और आत्मज्ञान की अवधारणाएं अधिक महत्वपूर्ण हैं, और जीवन की समझ व्यक्तिगत रूप से विकसित होती है। इन आयतों में जो विचार प्रस्तुत किए गए हैं, वे भारतीय दर्शन के व्यापक दृष्टिकोण से मेल नहीं खाते, क्योंकि वहाँ हर व्यक्ति के कर्मों और मानसिकता पर अधिक जोर दिया जाता है।